सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के आत्मसम्प्रत्यय एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. इन्द्रा बुढ़ानिया,
सहायक प्रोफेसर,
मोहिनी देवी गोयनका गर्ल्स बी.एड. कॉलेज,
घस्सू, लक्ष्मणगढ़, सीकर (राज.)
मो.9414540868
ईमेलः irkbudania@gmail.com

सारांश

विद्यार्थियों की जीवनशैली पर आत्म-सम्प्रत्यय और उनके समायोजन शैली का प्रभाव होता अवश्य है। सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में आत्म-सम्प्रत्यय और समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना शोध का प्रमुख उद्देश्य था। शून्य परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु माध्यमिक स्तर के 800 विद्यार्थियों को बीकानेर संभाग के चारो जिलों से समान रूप में सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यार्थियों को सर्वेक्षण हेतु चयन किया। प्रदत्तों के संकलन में ए.के.पी. सिंह और आर.पी सिंह द्वारा निर्मित विद्यालय विद्यार्थियों के लिए समायोजन मापनी और राजकुमार सारस्वत निर्मित आत्म-सम्प्रत्यय मापनी का प्रयोग किया। परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु क्रांतिक अनुपात मान और प्रसरण विश्लेषण से किया गया। मुख्य निष्कर्ष में पाया कि माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण-शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के आत्म-सम्प्रत्यय और समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

मुख्य शब्दावली : आत्म-सम्प्रत्यय, जीवन शैली और समायोजन प्रक्रिया।

प्रस्तावना :-

आत्म-प्रत्यक्षीकरण, आत्म-बोध मिलकर विद्यार्थियों के आत्मसम्प्रत्यय को सहज कर पथभ्रष्ट होने से बचा सकती है। विद्यार्थियों के सामाजिक एवं व्यावहारिक पक्ष में आत्म-सम्प्रत्यय का अहम् योगदान होता है। यही बालकों को विभिन्न दृष्टिकोणों से समस्या का हल कितना उपयोगी होता है। **इ.वी. हरलॉक** के अनुसार, **''आत्म-सम्प्रत्यय वे धारणायें हैं जो व्यक्ति अपने संबंध**

में रखते हैं।'' एक व्यक्ति जिस तरह के विचार अपने संबंध में रखता है, जिस प्रकार अपना प्रत्यक्षीकरण करता है या जिस ढंग से स्वयं को देखता है, उसे ही हम इसका आत्म-सम्प्रत्यय कहते हैं। है। प्रारम्भ में बालक का आत्म-सम्प्रत्यय सरल होता है। जैसे-जैसे बालक वृद्धि और विकास के मार्ग पर आगे बढ़ता है, उम्र के साथ-साथ उसमें वातावरण में उपस्थित वस्तुओं, विचारों तथा घटनाओं के बारे में विभिन्न संप्रत्ययों का विकास होता जाता है। इस प्रकार के संप्रत्ययों की सहायता से व्यक्ति को अपने आपको योग्यताओं, क्षमताओं, अच्छाईयों, बुराईयों, गुणों व दोषों के साथ जानने और पहचानने का उचित अवसर मिलता है। इस बोध की सहायता से वह न केवल अपने आपको दूसरों के नजरिये से बल्कि स्वयं के नजरिये से भी अच्छी तरह माप-तौल सकता है। व्यक्ति की अपने व्यवहार, योग्यताओं तथा अच्छाइयों के बारे में जो भी निर्णय, मूल्य तथा अभिवृत्तियाँ होती है, उन्हीं के समग्र रूप को व्यक्ति के आत्म-सम्प्रत्यय के नाम से जाना जाता है। इसलिए विद्यार्थियों के विकास में आत्म-सम्प्रत्यय की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है। इसके महत्व को देखते हुए विद्यार्थियों के तृतीय पक्ष आत्म-सम्प्रत्यय को अपने अध्ययन का प्रमुख चर बनाया है। बोइंम्ट्रर (Baumeister, 1999) ने आत्म-सम्प्रत्यय के परिभाषा में "The individual's belief about himself or herself, including the person's attributes and who and what the self is". लेविस (1990) ने आत्म-सम्प्रत्यय को एक महत्वपूर्ण शब्दावली बताते हुए सामाजिक मनोविज्ञान एवं मानवतावाद में इसे दो प्रकार की श्रेणी में विभाजित किया है। एक- आत्म का अस्तित्व और दूसरा - श्रेणियों में आधारित आत्म। दस प्रकार आत्म-सम्प्रत्यय मानव के व्यक्तित्व का वह सामान्य गुण या ''स्व'' निर्मित केन्द्रीय विचार हैं जिससे वह अपने बाहरी संसार के प्रति प्रतिक्रिया या प्रत्यक्षीकरण करता है, न कि उस संसार के प्रति जैसे की अन्य व्यक्तियों द्वारा देखा जाता हैं। और यह प्रत्यक्षीकरण परिपक्वता के साथ-साथ बदलते रहते हैं। (McLeod) इसी क्रम में कार्ल रोजर ने (1959) (Rogers, 1959) में आत्म-सम्प्रत्यय के तीन आयामों को बताया था-

i. आत्म–चित्र (स्व को अपने में देखना)
ii. आत्म–बोध (अपने मूल्य को देखना)
iii. आत्म–आदर्श (अपनी इच्छा को देखना)

डेविड फेलेनीयो (Feliciano, 2014) ने आत्म–सम्प्रत्यय के प्रभावित करने वाले कारकों में प्रमुख रूप से सामाजिक प्रभाव (Chaplin & John, 2007) सबसे ज्यादा, आदर्श (सेलेब्रटी) की पूजा (North, Sheridan, Maltby, & Gillett, 2007), भौतिकवाद (Chaplin & John, 2007), समूह का सम्प्रेषण (Krcmar & Giles, 2008), समूह की स्वीकार्यता (Rill, Baiocchi, Hopper, Denker, & Olson, 2009), समूह की अस्वीकृति (Krcmar & Giles, 2008) एवं (Cathcart & Gumpert, 1986)] पारिवारिक सम्प्रेषण (Shimkowski & Schrodt, 2012), माता–पिता का प्रभाव (Dailey, 2009), सहोदरों का प्रभाव (Schrodt, Ledbetter, & Ohrt, 2007) का प्रभाव विद्यार्थियों के आत्म–सम्प्रत्यय पर पड़ता है।

इनके द्वारा व्यक्ति अभाव, तनाव, भग्नाशा आदि को व्यक्त करता है तथा आंतरिक अंगों एवं बाह्य परिस्थितियों के मध्य सामंजस्य स्थापित करता है। यह सामंजस्य ही समायोजन है। समयोजन विरोधी इच्छाओं के नियंत्रण में सहायता करता है तथा नैतिक आदर्शों के अनुसार आचरण करने प्रयास करता है। (Sharma & Kardwasra, 2007) सुसमायोजन की दृष्टि से यह आवश्यक है कि व्यक्ति का मानसिक स्वास्थ्य अच्छा हो। बिना अच्छे मानसिक स्वास्थ्य व्यक्ति कार्य को सुचारू रूप से नहीं कर सकता।हमें यह ज्ञात है कि प्रत्येक कार्य के लिए मानसिक शक्ति की प्रबलता का होना आवश्यक है। जहाँ व्यक्ति जीवन में सुखी एवं सुसमायोजित होगा उन्हीं का मानसिक स्वास्थ्य भी अच्छा होता है। किसी प्रतिकूल मनोभौतिक परिस्थितियों में स्वयं को अनुकूलित करना समायोजन कहलाता है। यह समायोजन घर में माता–पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों के साथ, समाज में मित्रों सगे संबंधियों के साथ जरूरी है तो विद्यालयों में शिक्षकों के साथ। गेट्स के

अनुसार, ''समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।'' (Verma & Srivastva, 2001) सभी प्रकार की आवश्यकताओं के साथ सामायोजन के द्वारा ही मनुष्य का सर्वांगीण विकास संभव है। शिक्षा द्वारा समायोजन सरलता के साथ किया जा सकता है यही शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। शिक्षा वह प्रक्रिया है जो जीवन पर्यन्त चलती रहती है। शिक्षा व्यक्ति को विभिन्न परिस्थितियों में मार्ग दिखाकर समायोजित करती हैं। समायोजन कोई स्थिर प्रक्रिया नहीं है कि एक बार समायोजित हो जाने से प्रक्रिया रूक जाती है। ऐसा कतई नहीं है यह एक गत्यात्मक प्रक्रिया है। समायोजन जीवन में परिवर्तन काप्रदर्शित करता है। समायोजन एवं सामजस्य दोनों एक ही शबदावली मानी जाती है। अक्रोफ (Arkoff, 1968)) ने समायोजन की परिभाषा में बताया कि ''विद्यार्थियों की उपलब्धि को किस प्रकार से प्रभावित करता है और उनके वैयक्तिगत विकास को किस प्रकार में अवरोध को दूर करता है।''

इस प्रकार विद्यार्थियों के समायोजन को कई प्रकार के कारक प्रभावित करते हैं जैसे :-

A. आंकलन और उपलब्धि (Santrock, 2004)

B. विद्यालय या महाविद्यालय का वातावरण (Holmbek & Wandrei, 1993)

C. शैक्षिक समायोजन (Rice, 2009)

D. सामाजिक समायोजन (Monroe, 2009)

E. वैयक्तिगत-संवेगात्मक समायोजन (Law, 2007)

समायोजन से तात्पर्य पर्यावरण से सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध एवं उस दशा से है जिसके अन्तर्गत एक व्यक्ति प्रायः अपनी सभी आवश्यकताओं, शारीरिक तथा सामाजिक मांगों आदि की पूर्ति सामान्य रूप से कर लेता है। (Nugent, 2017) समायोजन की दिशा सापेक्ष होती है। समायोजन वह प्रकिया है जिसमें व्यक्ति

अपने और पर्यावरण के साथ-साथ परिस्थितियों के बीच सामंजस्यपूर्ण संबध प्राप्त करने के लिये अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है। कुछ मनोवैज्ञानिक समायोजन को ऐसा व्यवहार बताते है जिसका उद्देश्य तनाव कम करना होता है। प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों के समायोजन में भावात्मक समायोजन, विद्यालय समायोजन, कक्षाकक्ष समायोजन, सामाजिक समायोजन, वैयक्तिगत समायोजन आदि आयामों के माध्यम से समायोजन का मापन किया जाना है।

समस्या कथन :- प्रस्तुत शोध की प्रकृति एक तुलनात्मक अध्ययन की है। इस प्रकार के शोध में दो समूहों के चरों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। इसलिए प्रस्तुत शोधा में सरकारी एवं गैर-सरकारी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्याार्थियों की शामिल किये गये हैं। प्रस्तुत शोध में स्वतन्त्र चर के रूप में विद्यालय की प्रकृति सरकारी एवं गैर सरकारी और परतन्त्र चरों के रूप में समायोजन समस्या को देखते हुए शामिल किये गये हैं। शोध समस्या का परिसीमन करते हुए अपने शोध की समस्या को निम्न प्रकार से शीर्षक दिया है। **सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के आत्मसम्प्रत्यय एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन** वर्तमान के प्रतिस्पर्धा वाले युग में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्म-सम्प्रत्यय और समायोजन स्तर को जानकर उनकी समस्याओं के निदान एवं समाधान में अपना अहम् योगदान देगा। जिससे विद्यालयों के अपने पाठ्यक्रम एवं दिनचर्या के बदलाव में योगदान मिलेगा।

अध्ययन उद्देश्य :-

1. माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में आत्मसम्प्रत्य के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर-सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ :-

1. माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्मसम्प्रत्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध विधि :– शोधकर्त्ता ने प्रस्तुत अनुसंधान में आँकड़ों के एकत्रीकरण हेतु **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया है।

समष्टि एवं न्यादर्श :– शोधकर्ता द्वारा न्यादर्श में बीकानेर संभाग के श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बीकानेर एवं चूरू जिले के माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् 800 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरणों के नामः–

1.	समायोजन अनुसूची विद्यालयी विद्यार्थियों के लिए (2017)	ए.के.पी. सिंह और आर.पी सिंह
2.	आत्म–सम्प्रत्यय मापनी (2011)	राजकुमार सारस्वत

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी :– प्रस्तुत अध्ययन में परीक्षणों के मूल प्राप्तांको का विश्लेषण करने हेतु मध्यमान (N), प्रमाणिक विचलन (SD) एवं प्रसरण विश्लेषण (ANOVA) की गणना की गई।

परिकल्पना सं. 1 माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्म–सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका संख्या –1

माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के आत्म–सम्प्रत्यय के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता की तुलना।

Dimensions of Self-Concept	Types of School	Locality	Mean	Std. Deviation	N
SCQ Total	Govt.	Rural	171.16	26.633	202
		Urban	173.67	25.622	198
		Total	172.40	26.135	400
	Private	Rural	169.52	28.287	198
		Urban	168.78	29.824	202
		Total	169.14	29.039	400
	Total	Rural	170.35	27.442	400
		Urban	171.20	27.897	400
		Total	170.77	27.656	800

Dependent Variable	Type III Sum of Squares	df	Mean Square	F	Sig.
SCQ Total	2812.348[g]	3	937.449	1.227	.299

विश्लेषण : – उपर्युक्त तालिका सं.–1 में माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण–शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के समग्र आत्म–सम्प्रत्यय के मध्यमानों एवं मानक विचलनों को दर्शाये गये हैं। दोनों समूहों (सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों) के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के समग्र आत्म–सम्प्रत्यय के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 171.16 एवं 169.52 एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के समग्र आत्म–सम्प्रत्यय के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 173.67 एवं 168.78 और ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का मानक विचलन क्रमशः 26.633 एवं 28.287 एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का मानक विचलन क्रमशः 25.622 एवं 29.824 दर्शायें गये हैं। दोनों समूहों के मध्यमानों में अन्तर की तुलना करने हेतु द्विप्रस्थ प्रसरण विश्लेषण परीक्षण का मान (Two-way ANOVA) 1.227 असार्थक मान प्राप्त

हुआ है। प्रसरण विश्लेषण में 3 (df) के स्वतन्त्रता के अंश पर 0.05 सार्थकता का मान से अधिक .299 पाया गया है। अतः यहाँ निर्धारित शून्य परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण–शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के आत्म–सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

परिकल्पना सं. 2 माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

तालिका संख्या –2

माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के समायोजन के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता की तुलना।

Dimensions of Adjustment	Types of School	Locality	Mean	Std. Deviation	N
Total Adjustment	Govt.	Rural	65.47	12.453	202
		Urban	65.34	13.173	198
		Total	65.40	12.798	400
	Private	Rural	64.35	12.768	198
		Urban	65.90	13.379	202
		Total	65.14	13.086	400
	Total	Rural	64.91	12.606	400
		Urban	65.62	13.264	400
		Total	65.27	12.936	800

Dependent Variable	Type III Sum of Squares	df	Mean Square	F	Sig.
Total Adjustment	255.361[d]	3	85.120	.508	.677

विश्लेषण : – उपर्युक्त तालिका सं.–2 में माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण–शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के समग्र समायोजन के मध्यमानों एवं मानक विचलनों को दर्शाये गये हैं। दोनों समूहों (सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों) के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के समग्र समायोजन के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 65.47 एवं 64.35 एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के समग्र समायोजन के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 65.34 एवं 65.90 और ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का मानक विचलन क्रमशः 12.453 एवं 12.768 एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का मानक विचलन क्रमशः 13.173 एवं 13.379 दर्शायें गये हैं। दोनों समूहों के मध्यमानों में अन्तर की तुलना करने हेतु द्विप्रस्थ प्रसरण विश्लेषण परीक्षण का मान (Two-way ANOVA) 0.508 असार्थक मान प्राप्त हुआ है। प्रसरण विश्लेषण में 3 (df) के स्वतन्त्रता के अंश पर 0.05 सार्थकता का मान से अधिक .677 पाया गया है। अतः यहाँ निर्धारित शून्य परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर स्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण–शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

शोध निष्कर्षः–

1. माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण–शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के आत्म–सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया अर्थात् माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण–शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के आत्म–सम्प्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर दिखाई नहीं देता है।
2. माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के ग्रामीण–शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया अर्थात् माध्यमिक स्तर पर सरकारी एवं गैर–सरकारी

विद्यालयों के ग्रामीण–शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर दिखाई नहीं देता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. शर्मा, एन.आर. एवं कड़वासरा, ओम (2007) : "उच्चतर मनोविज्ञान" के.एस. पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, पृ.सं. 201
2. सिंह, राजेन्द्र प्रसाद एवं अन्य (2009) : "विकासात्मक मनोविज्ञान" श्री जैनेन्द्र प्रेस नई दिल्ली, पृ.सं. 484
3. वर्मा, प्रीति एवं श्रीवास्तव, डी.एन., ''आधुनिकः सामान्य मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा, 2001पृ.सं. 490
4. Arkoff, A. (1968). *Adjustment and mental health.* New York: McGraw.
5. Baron, R. A. (2009). *Psychology.* (5th, Ed.) New Delhi: Pearson, Prentice Hall.
6. Baumeister, R. F. (1999). *The Self in Social Psychology.* Philadelphia: Psychology Press.
7. Bhakar, M. R. (2012). A Study of Effects of Home Environment on Self-Concept of Upper Primary Level's Students. *Research Analysis and Evaluation , 4* (39), 91-92.
8. Kaur, H. (2013). A Comparative Study of Adjustment Level of Various Categories of Senior Secondary School Teachers of Kurukshetra District. *Research Analysis and Evaluation , 4* (42), 21-22.
9. Monroe, P. (2009). *International encyclopaedia of education.* New Delhi: Cosmo Publications.
10. McLeod, S. A. (n.d.). Self Concept. *Retrieved from www.simplypsychology.org/self-concept.html* , 2008.
11. Menninger, K. (1930). *What is a Healthy Mind?* New york: Coward-McCann.
12. NCERT. (2008). *Psychology.* New Delhi: National Council of Educational Research and Training.

13. Nugent, Pam M.S., "ADJUSTMENT," in *PsychologyDictionary.org*, April 7, 2013, HYPERLINK https://psychologydictionary.org /adjustment/ (accessed November 19, 2017).

14. Paliwal, JyotiAnd Bhatia, Taresh (2005) "A study of Adjustment and stress among normal and handicapped Children. International Conference on Applied and community psychology trends and direction." Gurukul Kangri University, Haridwar, 26-28, Feb. 2005

15. Pandey, R. (2008). *Educational Psychology.* Meerut, India: R. Lal Book Depot.

16. Raju, M. V. (January 2007,). Adjustment Problems among School Students. *Journal of the Indian Academy of Applied Psychology, , 33* (1), 73-79.

17. Rill, L., Baiocchi, E., Hopper, M., Denker, K., & Olson, L. N. (2009). Exploration of therelationship between self-esteem, commitment, and verbal aggressiveness in romantic dating relationships. *Communication Reports , 22* (2), 102-113.

18. Singh, A. K. (2014). *Advanced General Psychology* (4th ed.). Delhi: Motilal Banarsidass.